राम की शक्ति–पूजा काव्य–सौष्ठव

डॉ. आर.पी. वर्मा,

श्एसो. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

काव्य रचना विश्व की सुन्दरतम् रचनाओं एवं उपलब्धियों के अन्तर्गत स्वीकारी जाती है। यह सौंदर्य काव्य के नितान्त निजी संसार में अनेक रूपों में व्यक्त एवं रूपायित हुआ करता है। सौन्दर्य भाव एवं विचारों में तो रहा ही करता है, उसके स्वरूप विधान, अभिव्यंजना–शैली और भाषा आदि में भी रहा करता है। इन्हीं सभी तथ्यों के आलोक में ही किसी काव्य के सौष्ठव का विवेचन सम्भव हुआ करता है। क्योंकि सौन्दर्य की सुन्दर रीति से अभिव्यक्ति ही काव्य है। इस अभिव्यक्ति के सहायक रूप में कवि को अनेक अंगों की संयोजना करनी पड़ती है। यथा–कथानक, भाषा, अलंकार, छन्द आदि। अतः 'राम की शक्ति–पूजा' के काव्य–सौष्ठव की परीक्षा करने के लिए मुख्यतः इन्हीं अंगो का विवेचन करना उपयुक्त है।

'राम की शक्ति–पूजा' की कथा बंगाल की कृत्तिवासी या रामायण से ली गई है, किन्तु कथा में अनेक परिवर्तन भी कवि ने अपनी ओर से किये हैं। ये परिवर्तन आवश्यक भी होते हैं। क्योंकि कवि कथा के मूल को संभालता हुआ भी प्रभावान्विति के लिए अपने काव्य में अनेक परिवर्तन करने के लिए बाध्य होता है। अतः इस कथा का चैतन्य रूपाकार कवि का अपना है। कथा से सम्बद्ध सभी प्रसंग संक्षिप्त कर दिये गये हैं अथवा शून्य बना दिये गये हैं। कुछ नवीन प्रसंगों की उद्भावना भी की गयी है। इस कविता के कथानक का सारांश यह है– राम–रावण युद्ध में महाशक्ति द्वारा रावण का पक्ष लेना, राम की निराशा, हनुमान के रौद्र रूप के आयोजन से आच्छन्न उस निराशा का विघटन करने का प्रयास, सीता की कुमारिता छवि की स्मृति, विभीषण द्वारा वीर–भाव की उत्तेजना का प्रयत्न, जाम्बवान के प्रस्ताव पर राम की शक्ति–आराधना, सात्विक यौगिक क्रिया से राम का आराधनारूढ़ होना, महाशक्ति का एक पुष्प चुराकर ले जाना, राम की निबिड़ ग्लानिजन्य निराशा से फूटता आशा की किरण के माध्यम से स्वयं को राजीवनयन होने का स्मरण होना, राम का पुष्प के स्थान पर अपना नेत्र अर्पित करने के लिए सन्नद्ध होना, शक्ति का प्रकट होकर विजय का वरदान देना।

यह कथानक अत्यन्त सुनियोजित ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस कथा योजना में नाटक की पांचों कार्यावस्थाओं का समुचित रूप से पालन हुआ है। युद्ध के वातावरण की उत्तेजना और उसकी भूमिका में राम की सभा का विषादपूर्ण चित्रण प्रारम्भ अवस्था है। राम की निराशा, हनुमान का रौद्र–रूप धारण करके अपनी शक्ति का प्रदर्शन और विभीषण के द्वारा उद्बोधन प्रयत्न अवस्था है। जाम्बवान के द्वारा राम को शक्ति पूजा का परामर्श देना प्राप्त्याशा है। राम द्वारा पूजा का विधान करना नियताप्ति है और शक्ति द्वारा विजय का वरदान फलागम है। इस कविता का प्रारंभ और अन्त भी ऐसे नाटकीय ढंग से होता है कि पाठक ने मन में कौतूहल, हर्ष, उत्कंठा, औत्सुक्य आदि नाट्य संचारियों का तांता बंध जाता है। वस्तु–योजना और उसके विकास

में कवि ने अनेकशः मनोविज्ञान के सिद्धान्तों एवं मनोविश्लेषणात्मक पद्धति को भी अपनाया है। अतः सभी नियोजनाओं में अत्यधिक सजीवता आ गई है। इस कविता में वर्णित राम का अन्तद्वैन्द्व, विजय के साधनों के रहते हुए भी निराशा किन्तु साधना में विश्वास आदि मनोवैज्ञानिक दृष्टियों से चरमबिन्दु को स्पर्श करता हैं एक ही क्षण में राम के उठने–गिरने, सर्वथा विरोधी भावों का यह सुन्दर एवं प्रभावशाली चित्रण देखिये–

'देखत राम, जल रहे शलभ ज्यों रजनीचर,
ताड़का सुबाहू, विराध, शिरस्त्रय, दूषण, खर,'

इस अवसर का यह विरोधी चित्रण भी देखिए–

'फिर देखी भीमा–मूर्ति आज रण देखी जो
फिर सूना हंस रहा श्रट्टहास रावण खल–खल
भावित नयनों से गिरे दो मुक्तादल।'

इससे अधिक नाटकीयता और क्या हो सकती है। अपार पौरुष चीख उठे, इससे अधिक कला की साधना और क्या होगी ? सिंह स्वयं को असहाय समझे जीवन की इससे अधिक विडम्बना और क्या होगी–

'धिक जीवन जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसका सदा ही किया शोध।'

विप्लव, संघर्ष और विरोध की ध्वजा लेकर भी अपनी विजय का आत्म विश्वास कैसा होग, इसका अनुमान वही व्यक्ति लगा सकता है जिसने संघर्षों के पर्वतों पर खड़े होकर विजय की हरीतिमा के स्वप्न देखे हैं। निराला ने राम को मानव के रूप में विचित्र किया है। यह चित्रण विलक्षण है। राम के वार और कर्तव्य–परायण जीवन में जो विह्वलता और निराशा के दर्शन होते हैं वे राम को यथार्थ मानवीय भूमि पर प्रतिष्ठित कर देते हैं। वैसे निराला राम के ईश्वर–रूप को भी नहीं भूल पाये हैं–

'मर्यादा–पुरुषोत्तम वे सर्वोत्तम, अनन्य
लीला–सहचर, दिव्य भावझर.....।'

निराला ने तुलसी की भाँति राम को पृथ्वी के भारों का विनाश करने के लिए अवतरित नहीं किया है, वरन् समस्त संघर्षों को उनके सामने ले जाकर प्रस्तुत कर दिया है। निराला के राम की यही मानवीयता है। ऐसा करने में ही सब के व्यक्तित्व का प्रतिफल में सम्भव हो सका है। बौद्धिकता एवं भावुकता तथा उनके मध्य से निःसृत कल्पना का यह अप्रतिम श्रृंगार है।

कोचे का यह कथन कि अभिव्यंजना ही कला है, कुछ सीमा तक ठीक है। काव्य में अभिव्यंजना का माध्यम भाषा है। निराला की भाषागत साधना उच्च एवं प्रशंसनीय है। 'राम की शक्ति–पूजा' में निराला द्वारा प्रयुक्त भाषा के अध्ययन को दो वर्गों के अन्तर्गत रक्खा जा सकता है–

वर्ण–योजना भाव के स्थिरीकरण का सबसे अच्छा साधन है। प्रस्तुत कविता में ओज और रौद्र भावों के लिए महाप्राण द्वित्व एवं फैलाव वाले वर्णों का प्रयोग किया गया है। यथा–

'शत घूर्णावर्त, तरंग–भंग उठते पहाड़,
जल–राशि राशि–जल पर चढ़ता खाता पछाड़
तोड़ता बंध–प्रतिसंध धरा, हो, स्तीफ वक्ष
दिग्विजय–अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष,
शत वायु वेग–बल, डूबा अतल में देश–भाव,
जल–राशि विपुल मथ मिला अनिल में महाराव,
वज्रांग तेजघन बना पवन को, महाकाश,
पहुंचा एकादश रुद्र क्षुब्ध कर अट्टहास।'

मिसृणभावों के लिए कोमल वर्णों का प्रयोग हुआ है। यथा–

'ऐसे क्षण अन्धकार धन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी–तनया–कुमारिका–कवि, अच्युत

देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का–प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का–नयनों से गोपन–प्रिय सम्भाषण,
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान–पतन...।'

निराला की भाषा की वर्ण–योजना पूर्णतया संगीत पर आधृत एवं रणात्मक है। भावों का आरोह तथा अवरोह के समय इन्हीं ध्वनियों के व्यंजक वर्ण या शब्द इसमं रखे गये हैं, यथा–

'गर्जित–प्रलयाब्धि–क्षुब्ध–हनुमत केवल प्रबोध
उद्‌गीरित वन्हि–भीम–पर्वत–कपि भतुः प्रहर–
जानकी–भीर–उर–आशा भर–रावण सम्बर।
लौटे मुगदल। राक्षस पदतल पृथ्वी टलमल,
विंद महोल्लास से बार–बार आकाश बिकल।'

वर्ण–योजना करते समय कवि ने वातावरण सृष्टि का सर्वत्र ध्यान रखा है। राम युद्ध से लौट रहे हैं किन्तु उनकी मुख–श्री आज पहले जैसी तेजमयी नहीं है। शिथिल शरीर व स्थल अंग–विन्यास और सभी वीरों के कार्यरत रहते भी सर्वत्र निराशा और खिन्नता का वातावरण है–

'है अमा–निशा, उगलता गगन घर अंधकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन–भार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल,
भूधर ज्यों ध्यान–मग्न केवल जलती मशाल।'

'केवल जलती मशाल' ने समूचे खिन्न वातावरण में मूर्तिमय बना दिया है। यहाँ जो बिम्ब उभरता है। वह वास्तव में समूचे हिन्दी–काव्य की अमूल्य योजना एवं निधि है।

जिस प्रकार निराला की शब्द छवि की वर्ण–योजना भावों के अनुरूप है, उसी प्रकार इनकी वाक्य योजना भी भावों को मूर्ति–मत बनाने में सक्षम है। भाव–सघनता से पूर्ण तथा त्वरित गति वाले चित्रों के प्रत्यंवन में समस्त–बहुल वाक्यों का प्रयोग हुआ है। यथा–

'तीक्ष्ण–शर–विधृत–क्षिप्रकर–वेग प्रखर,
शत–मेल सम्बरण–शील, नील नभ गर्जित स्वर।'

और प्रसादगुण से युक्त भावों के लिए असमासिक वाक्यों का प्रयोग किया है, जो अत्यधिक स्वाभाविक बन पड़ा है –

'कहती थी माता सदा राजीव नयन।'

इस प्रकार हम देखते हैं कि निराला की भाषा में वर्ण और वाक्यों का इतनी सतर्कता और जागरूकता से प्रयोग किया गया है कि उनके अद्विषयक भावों का अर्थ ही नहीं, वरन् ध्वनि भी निकलती है। यह योजना, कवि की संगीत के ज्ञान की पूर्ण परिचायिका है। इसी से इस काव्य में नाद–सौन्दर्य का भी सर्वत्र समावेश सम्भव हो सका है।

काव्य में अलंकारों का भी महत्व होता है। अलंकार सौन्दर्य के विधायक एवं उत्कर्षक हो जाते हैं। अतः समर्थ कवि केवल भाषा को मडित करने के लिए ही अलंकारों का प्रयोग नहीं करते, वरन् उनके माध्यम से भावों को भी उत्कर्ष प्रदान करने के लिए ही अलंकारों का प्रयोग किया है यथा–

'ऐसे क्षण अन्धकार धन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी–तनया–कुमारिका छबि...।'

इन पंक्तियों में उपमा अलंकार का बड़ा ही भावपूर्ण प्रयोग है। राम के निराशा से भरे हुए हृदय को अन्धकार से घिरे हुए आकाश में उपमित करना और उसमें चमकने वाली बिजली को सीता की स्मृति से उपमित करना भाव सौन्दर्य भी सृष्टि करता है। मनोविज्ञान की पूर्व–दीप्ति पद्धति ने इस अलंकार योजना को और भी समृद्ध बना दिया है।

'रघुवीर! तीर सब वही तूण में हैं रक्षित,
है वही वक्ष, रण–कुशल हस्त, बल वही अमित,
है वही सुमित्रानन्दन मेघनाद–जित रण
हैं वही भल्लपति वानरेन्द्र सुग्रीव प्रयन,
ताराकुमार भी वही महाबल श्वेत धीर,
अप्रतिभट्ट वही एक अर्बुद–सम महावीर,
हैं वही दक्ष सेनानायक, है वही समर,
फिर कैसे असमय हुआ उदय यह भाव–प्रहर।'

इसमें विशेषोक्ति अलंकार है। इस अलंकार के प्रयोग से राम की विवशता और भी गहन बन गई है। उसे प्रत्यक्ष स्वरूप एवं आकार प्राप्त हो गया है।

जिस प्रकार निराशा की स्थितियों की अभिव्यंजना में अर्थालंकारों का भावपूर्ण प्रयोग हुआ है, उसी प्रकार शब्दालंकारों का भी सुघड़ प्रयोग किया गया है। यथा–

'रावण, रावण, लम्पट खल, कल्मत–गताचार,
जिसने हित कहते किया मुझे पाद–प्रहार,
बैठा उपवन में देगा दुःख सीता को फिर,
कहता रण की जय–कथा परिषद–दल से घिर,
सुनता बसन्त में उपवन में कल–कूजित–पिक,
मैं बना किन्तु लंकापति, धिक्, राघव, धिक् धिक्।'

इस पंक्तियों में वीप्सा और काकुवकोक्ति अलंकारों का भावोत्कर्षक प्रयोग में सिद्धहस्तता को रूपायित करते हैं !

जहाँ तक छन्द–योजना का सम्बन्ध है, इस कविता में मुक्तछन्द का प्रयोग हुआ है। इस सफल प्रयोग के द्वारा मानों निराला जी मुक्तछन्द–विरोधी आलोचकों को बता रहे हैं कि यह छन्द अच्छी से अच्छी कविता की रचना में सहायक हो सकता है। खंडकाव्य और महाकाव्य तक इस छन्द में लिखे जा सकते हैं। इस दृष्टि से छन्दयोजना और उसका मुक्त–भाव से प्रयोग पूर्ण सार्थक है।

इस कविता के मुख्य रस वीर रस है। सर्वत्र वीर रस के अनुकूल शब्दों की योजना हुई है। वीररस की अभिव्यक्ति के लिएसमासवहुल वाक्य और पुरुष एवं कठोर शब्दों की योजना ही उपयुक्त होती है। निराला जी ने इस कविता में ऐसा ही किया है यथा–

'प्रति–पल–परिवर्तित व्यूह–भेद–कौशल–समूह–
राक्षस विरुद्ध–प्रत्यह–कुद्ध–कपि विषम–हूह,
विच्छरित वन्हि–राजीवनयन–हतलक्ष्य–बाण,
लोहित–लोचन–रावण, मोचन–महीयान... ।'

इन पंक्तियों में युद्ध का वर्णन है जिसके माध्यम से वीररस की सृष्टि की गई है। जो अत्यधिक स्वाभाविक बन पड़ा है।

रौद्र रस वीररस का सहायक है। इसलिए इन दोनों रसों को मित्र रस माना गया है। राम की शक्ति–पूजा में रौद्र रस का भी सफल चित्रण है। यथा–

'ये अश्रु राम के आते ही मन में विचार,
उद्वेग हो उठा शक्ति खेल सागर अपार,
हो श्वसित पवन उनचास पिता–पक्ष तुमुल
एकत्र वक्ष पर बहा वाष्प को उड़ा अतुल
शत धूर्णावर्त, तरंग भंग, उठते पहाड़,
जल–राशि राशि–जल पर चढ़ता खाता पछाड़'

इन पंक्तियों में हनुमान के रौद्र रूप का वर्णन है। अतः हम यह कह सकते हैं कि 'राम की शक्ति–पूजा' हिन्दी–साहित्य की, विशेषतः आधुनिक हिन्दी–साहित्य की, सर्वोत्कृष्ट रचनाओं में से एक है। काव्य–सोष्ठव की दृष्टि से यदि इसे आधुनिक हिन्दी साहित्य विशेषतः छायावादी काव्य की काव्यगत सीमा मान लिया जाये तो अनुचित न होगा। मनोवैज्ञानिक घरातल पर राम

के महान मानवत्व का चित्रण करके वास्तव में कवि निराला तो अमर हो ही गये हैं। राम का रामत्व भी समन्वित रूप में मोहक एवं अमर हो गया है।

संदर्भ

1. छायावाद के कवि निराला और पंत–विजय बहादुर सिंह, पृ. 123
2. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि–द्वारिका प्रसाद सक्सेना, पृ. 61
3. हिंदी के प्रमुख कवि–डॉ. आर.पी. वर्मा, पृ. 134
4. कवि निराला–नंद दुलारे वाजपेई, पृ. 141
5. निराला का साहित्य–सुल्तान अहमद, पृ. 21
6. निराला का साहित्य–गंगा प्रसाद पाण्डेय, पृ. 142
7. निराला–राम विलास शर्मा, पृ. 89
8. राम की शक्ति पूजा का एक अध्ययन – राम बीरबल साहनी, पृ. 131
9. निराला की साहित्य साधना–भाग 1, भाग 2, भाग 3 – राम विलास शर्मा, पृ. 42, 82, 129

Copyright © 2017, Dr. R.P Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.